रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017
चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

तीन बातें
तीन बातें असल उद्देश्य से रोकती हैं
बदचलनी, गुस्सा और लालच
तीन चीज़ें कोई दूसरा चुरा नहीं सकता
अकल, चरित्र और हुनर
तीन चीज़ें निकल कर वापस नहीं आतीं
तीर कमान से, बात ज़बान से और प्राण शरीर से
तीन व्यक्ति वक्त पर पहचाने जाते हैं
स्त्री, भाई और दोस्त
Adv.
इस स्थान पर छोटा सा विज्ञापन देकर अपने व्यवसाय में चार चाँद आप भी लगा सकते हैं। विज्ञापन प्रभाग

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –38 ● अंक –22 ● कानपुर 16 से 30 नवम्बर 2016 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

अधिकार की चाहत में होश न खोयें

आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक बार फिर अधिकारों को लेकर घमासान है हर तरफ अधिकारों की ही चर्चा है लोग इसी में व्यस्त हैं कि किसके पास अधिकार है और किसके पास नहीं है ?कभी कभी तो चर्चायें इतनी गरम हो जाती हैं जो कि स्थिति को भद्र से अभद्र तक ले जाती है।

प्रदेश का पूर्वांचल इलाका हो या पश्चिमी – हर तरफ अधिकारों को लेकर माहौल गरम है, हर संचालक अपने आप को अधिकार सम्पन्न बताता है और हमारा चिकित्सक भी इतना चतुर हो चुका है कि वह अपने आपसे ज़्यादा किसी को समझदार नहीं मानता । परिणाम यह है कि एक नई अराजकता जन्म ले रही है यह सारे के सारे दृश्य एक नये परिदृश्य की संरचना कर रहे हैं और जब इन सारे परिदृश्यों को मिलाकर आने वाले भविष्य की कल्पना की जाती है तो बहुत ज़्यादा आशा बलवती नहीं होती है ! समाज का नियम है कि वह परिवर्तन के साथ चलता है परिवर्तन प्रकृति करे तो कोई बात नहीं लेकिन जब परिवर्तन की दिशा अपने बदल दें तो मन सोचने को विवश हो जाता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अभी तक कार्य करने के लिए वातावरण अच्छा है शासकीय सोच भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ है सरकार का सहयोग और समर्थन लगातार इलेक्ट्रो होम्योपैथों को मिल रहा है, फिर ऐसी कौन सी नई स्थिति पैदा हो जाती है जो हमारे साथी विचलित हो जाते हैं और विचलन भी इस तरह का होता है जिससे कि वह कुछ ऐसा कर डालते हैं जिससे कि नई परिस्थितियां जन्म ले लेती हैं। आजकल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबसे महत्वपूर्ण विषय है चिकित्सकों के पंजीयन का।

प्रदेश में वर्तमान लागू व्यवस्था के अनुसार चिकित्सकों को चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए अपने पंजीयन का आवेदन करना होता है पहली व्यवस्था के अनुसार सभी अधिकारी चिकित्सकों का पंजीयन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में हुआ करता था इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सक भी अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के यहां प्रेषित कर देते थे, यह अलग बात है कि अलग–अलग ज़िलो में मुख्य चिकित्साधिकारी अलग–अलग रवैया अपनाते रहे हैं लेकिन अगस्त 2016 में पंजीयन की व्यवस्था में परिवर्तन हुआ परिवर्तित व्यवस्था के अनुसार आयुर्वेद एवं युनानी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों का पंजीयन क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं युनानी अधिकारी कार्यालय में होगा।

होम्योपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन ज़िला होम्योपैथिक चिकित्साधिकारी कार्यालय में होना है।

मात्र एलोपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में होगा। इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए सरकार द्वारा न तो कोई पृथक व्यवस्था की गयी है और न ही कोई पंजीयन से सम्बन्धित स्पष्ट निर्देश निर्गत किये गये हैं ऐसी स्थिति में सिर्फ एक ही रास्ता बचता है कि जब तक सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए कोई पृथक व्यवस्था नहीं की जाती है अथवा किसी विभाग को स्पष्ट निर्देश नहीं दिये जाते हैं तब तक ज़िले के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को पंजीयन का आवेदन प्रस्तुत करना चाहिये यह इसलिए आवश्यक है कि जांच के समय कोई भी अधिकारी आप पर यह आरोप न लगा सके कि आपने प्रचलित व्यवस्था का अनुपालन नहीं किया है इसलिए आप चिकित्सा व्यवसाय के अधिकारी नहीं हैं, यदि आपने पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत कर रखा है तो आप जांच अधिकारी से आंख मिलाकर बात कर सकते हैं और प्राप्त अधिकारों के बारे में उस अधिकारी को बता भी सकते हैं, जिससे कि आपकी अपनी प्रैक्टिस की वैधानिकता और अधिकारिता की प्रमाणिकता प्रस्तुत हो जाती है।

इन्हीं सब विषयों को लेकर हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक नेताओं के मध्य मतयक्यता नहीं है वह एक दूसरे के विरूद्ध टिप्पणी करने से भी बाज़ नहीं आते हैं इस तरह के कार्यों से हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के मन में भ्रम की स्थिति पैदा होती है और भ्रमित व्यक्ति कभी भी सकारात्मक निर्णय लेने में सक्षम नहीं हो पाता, परिणाम यह होता है कि हमारे अधिकांश चिकित्सक अनिर्णय में पड़े रहते हैं अधिकार होते हुए भी अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।

- अधिकार आपको प्राप्त है
- अधिकारों का प्रयोग करना समझें
- आर0टी0आई0 से लाभ सम्भव नही
- कार्य को दें प्रमुखता
- व्यर्थ के कार्यों में ऊर्जा नष्ट न करे
- सम्भावनायें प्रतिपल बदलती हैं
- इच्छाओं की पूर्ति कार्य से ही सम्भव

कदाचित ऐसी स्थिति का यदि जन्म न हो तो ही अच्छा है और यदि परिस्थितियों वश जन्म हो ही जाता है तो उनका शीघ्र शमन होना भी अति आवश्यक है, शमन की आवश्यकता इसलिए है कारण जब कोई विषय बहुत लम्बे समय तक अनिर्णित रहता है तो लोगों का विश्वास उठने लगता है। डगमगाये विश्वास वाला व्यक्ति कभी भी अपेक्षित परिणाम नहीं देता क्योंकि उसकी मनःस्थिति स्थिर ही नहीं रह पाती ।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यदि बहुत दूर तक आगे ले जाना है तो यह सभी ज़िम्मेदारों का दायित्व है कि कोई ऐसी कार्ययोजना तैयार करें जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज में फैली भ्रांतियां दूर हो। अधिकारिता और अनाधिकारिता पर चर्चायें बन्द हों, कार्य करने की प्रवृत्ति का पुनर्जागरण करना होगा तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास सम्भव हो पायेगा।

जब विकास की बात चलती है तो यह बात आती है कि क्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी का विकास नहीं हो रहा है ?तो यदि विचार करें तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास का आंकलन उस चिकित्सा पद्धति के जनप्रयोग पर आधारित होता है दूसरा उसकी शिक्षण व्यवस्था पर, विकास में निरन्तरता बनी रहे इसके लिए अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य होते रहने चाहिये चूंकि अनुसंधान ही हमें नवीनता से परिचय कराता है। यदि हम आज से 5 साल पहले के इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास पर दृष्टि डालें और देखें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कितनी प्रैक्टिस हो रही है ?समाज में इसे कितना स्वीकारा जा रहा है ? तो इसके आंकलन का सीधा–साधा रास्ता है कि औषधियों की मांग और पूर्ति का अनुपात क्या है ?आज से 5 वर्ष पूर्व तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां चन्द लोग ही बनाते थे, मांग भी बहुत कम थी, इन पांच सालों के अन्दर पूरे देश में एक सैकड़ा से ज़्यादा दवा निर्माण इकाईयां अस्तित्व में आई हैं और हर कम्पनी दावा करती है कि उनकी कम्पनी लाखों का वार्षिक टर्न–ओवर करती है। नित नई कम्पनियां खुलती जा रही हैं यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, प्रैक्टिस भी बढ़ी है, सीधा सा फण्डा है कि दवा खरीदी जाती है तो व्यवहार में भी लायी जाती होगी। यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की लोकप्रियता का स्पष्ट उदाहरण है, हाँ एक बात ज़रूर है कि आज पीढ़ीयों में टकराव के स्पष्ट दर्शन होते हैं जो पुरानी पीढ़ी के लोग हैं वह परम्पराओं पर विश्वास करते हैं और मैटी के सिद्धान्तों से कोई समझौता नहीं करना चाहते हैं फलतः नई पीढ़ी के लोग कभी कभी ऐसा व्यवहार करने लगते हैं जो कि नई व्यवस्थाओं को जन्म दे देते हैं।

अक्सर हमारे साथी यह सवाल करते हैं कि अब नया क्या हुआ ? यह एक ऐसा यक्ष प्रश्न है जिसका उत्तर हर एक को स्वीकार नहीं होता, जीवन में नवीनता तो आती है लेकिन नया पन बार–बार नहीं होता इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थापित हो उसका यथा सम्भव विकास हो शासकीय संरक्षण और ज़्यादा प्राप्त हो हमारे साथियों को भी शासकीय सेवाओं में अवसर मिले यह सारी कि सारी कामनायें तभी फलीभूति होंगी जब पीढ़ियों के बीच वैचारिक समानता जन्म लेगी । अपने विचारों को रखना हर एक का अधिकार है लेकिन अपने ही विचारों को थोपना हर किसी को स्वीकार नहीं होता। नई पीढ़ी की जो बात पद्धति के लिए हितकारी हो जिससे चिकित्सा पद्धति का भला हो ऐसे विचारों को पुरानी पीढ़ी को स्वीकारने में गुरेज़ नहीं करना चाहिये इसके साथ–साथ नई पीढ़ी का दायित्व है कि वह इतिहास को न बदले क्योंकि इतिहास हमारी धरोहर है, धरोहर को सजोना नई पीढ़ी का दायित्व है जब सबका लक्ष्य एक है तो आपसी कटुता के दर्शन क्यों होते है आज जो भी लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े है उनकी यही इच्छा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास हो। इसलिए हमें वही रास्ते ढुढने होंगे जिसपर चल कर हम सब एक नये सुप्रभात का इंतजार करें । कभी भी सम्भावनायें खत्म नहीं होती है कब क्या हो जाये यह हम सब नहीं जान सकते लेकिन इसी

शेष पेज 3 पर

आवश्यक सूचना
अब काउण्ट डाउन शुरु
इलेक्ट्रो होम्योपैथी का
इतिहास संजोए
व
बढ़ते कदमों की
जीती–जागती तस्वीर
A Saga of
Electro Homoeopathy
(A Documentry Film)
का लोकार्पण
नवम्बर के तीसरे
या चौथे रविवार को

नई दिल्ली में
संभावित है
एम0 इदरीस ख़ान
निर्माता एवं वितरक
मो:– +91 93111565014

खामोशी तो टूटनी चाहिये

पिछले कुछ महीनों से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक आन्दोलन में एक अजीब सी शान्ति है जितने भी आन्दोलनकारी थे वह समाज में तो दिख रहे हैं परन्तु उनकी गतिविधियां ठप्प सी दिख रही हैं, आज से दो माह पहले जो लोग सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते थे पता नहीं उनकी सक्रियता को क्या हो गया है (फेस–बुक, वाहटसएप,ट्वीटर इन्सट्राग्राम के पन्ने खाली जा रहे हैं) यह सब देखकर मन यह सोचने पर विवश हो जाता है कि कहीं यह सब तूफान आने के पहले की शान्ति तो नहीं है ?

यह सोचकर मन में तरह–तरह की शंकायें जन्म लेने लगती हैं और भय भी लगने लगता है, शंकाओं का जन्म लेना और भय का लगना इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्वभाविक सी बात है क्योंकि जबसे हमने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में कदम रखा है तबसे तरह–तरह के तूफानों का सामना करना पड़ा है। यह अलग बात है कि अभीतक कोई भी ऐसा तूफान नहीं आया जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समाप्त करने में सक्षम रहा हो ! हाँ तकलीफें ज़रुर दी हैं, नये–नये विवादों को जन्म दिया है परन्तु यह हम ही थे जिन्होंने हर बार गिरकर उठना सीखा है, परिस्थितियां कितनी भी विपरीत क्यों न हो हमें परिस्थितियों की दिशा मोड़ना आता है लेकिन दिशायें मोड़ते–मोड़ते दिशाहीन होने का भय भी सताता रहता है, कारण इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के आन्दोलन को सफल बनाने के लिये एक निश्चित दिशा का होना बहुत ही आवश्यक है आज के परिदृष्य में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में ज़बरदस्त कार्य की आवश्यकता है क्योंकि यही एक मात्र ऐसा रास्ता बचा है जिसपर चलते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित किया जा सकता है कुछ लोग काम करने के विषय पर तर्क देते हैं कि कार्य कैसे किया जाये ?ऐसे लोगों के लिये समझने के लिये यह एक आसान तरीका है कि किसी भी चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता ही उसकी सार्थकता को सिद्ध करती है हम लोग बात–बात पर एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति का उदाहरण देते हैं कि यह पद्धति कितनी कारगर है इसके डाक्टर कितने सम्पन्न होते हैं हर ओर मान सम्मान मिलता है यह सारी बातें कहने व सुनने में तो बहुत अच्छी लगती हैं परन्तु हकीकत में हम केवल सिक्के का एक ही पहलू देखते हैं और वह है सिक्के की चमक, हमको यहाँ पर यह भी सोचना चाहिये कि इस चमक को पाने के लिये कितना प्रयास और कष्ट झेला गया होगा !

जिस समय एलोपैथी स्थापित होने का प्रयास कर रही थी उस समय पूरे देश में आयुर्वेद का बोल–बाला था वैद्यों का सर्वत्र सम्मान था लेकिन एलोपैथ के समर्थकों ने इस कदर मेहनत की आयुर्वेद को ही किनारे कर दिया, ठीक इसी प्रकार हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथों को चाहिये कि हम सब भी मिलकर कोई ऐसा कार्य करें जिससे कि किसी पद्धति को तो हमें किनारे नहीं करना है लेकिन हम अपनी सार्थकता तो सिद्ध कर ही दें। हमारे सारे आन्दोलन और सारी गतिविधियां तभी सार्थक होंगी जब हमारा कार्य सर चढ़कर बोलेगा, सम्मान तो व्यक्ति का नहीं अपितु उसके द्वारा किये गये कार्यों का होता है। अस्तु हम सबका यह नैतिक दायित्व है कि हम सब मिलकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये सार्थक सामूहिक ऐसे कार्य करें जिससे कि शीघ्र से शीघ्र इलेक्ट्रो होम्योपैथी के स्थापित होने का मार्ग प्रशस्त हो सके। रास्ते तो कभी बन्द नहीं होते ! हाँ ढूँढने वाला चाहिये !! एक कहावत भी है कि जहाँ चाह वहीं राह, हमें जल के प्रवाह से सीख लेनी चाहिये, जल के प्रवाह को कोई रोक नहीं सकता अगर एक मार्ग अवरुद्ध किया जाता है तो दूसरी राह जल स्वयं ही बना लेता है। ठीक इसी प्रकार से हमारे पास भी कार्य करने के अनेकों अवसर हैं बस ज़रुरत इस बात की है कि सही समय पर उन अवसरों को हम प्रयोग में ला सकें, शान्ति से बैठना, निराश होकर बैठना, या जो मिल गया उतना ही ठीक है या फिर क्या फायदा काम करने से आगे तो कुछ हो नहीं सकता इस प्रकार के निरर्थक विचारों को मन से त्याग कर एक नये उत्साह के साथ कार्य में लगना होगा।

बड़े उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयास भी सघन और बड़े करने पड़ते हैं , कार्य में खामोशी नहीं जोश के दर्शन होने चाहिये।

जागरुकता अभियान का दूसरा चरण 5 नवम्बर से

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के मध्य व्याप्त निराशा और अज्ञानता को दूर करने के लिये गत वर्ष बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने संयुक्त रुप से एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया था इस कार्यक्रम को नाम दिया गया था चिकित्सक अधिकारिता जागरुकता अभियान, यह अभियान प्रदेश व्यापी स्तर पर चलाया गया, जगह–जगह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के साथ बैठ कर उनकी परेशानियों को जानने का प्रयास किया गया साथ ही साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये केन्द सरकार व राज्य सरकार ने कौन–कौन एवं कब–कब आदेश जारी किये हैं, इन आदेशों की इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में उपयोगिता क्या है, तथा इन आदेशों के आने से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक भाईयों को क्या–क्या लाभ होने हैं और इन लाभों का उपभोग करने के लिये चिकित्सकों का क्या दायित्व है ? इन सभी बिन्दुओं पर गम्भीरता से चिकित्सकों के साथ चर्चा की गयी, उत्तर प्रदेश भारत के मानचित्र पर एक विशाल प्रदेश है इसलिये प्रथम चरण में हम इस आन्दोलन को प्रदेश व्यापी धार नहीं दे पाये, हर जनपद तक हमारी पहुँच नहीं हो पाई, इसका परिणाम यह हुआ कि चिकित्सक अधिकारिता जागरुकता अभियान को जो सफलता मिलनी चाहिये थी वह नहीं मिली जिससे कि हमें हमारे अभीष्ठ की प्राप्ति नहीं हुई। समय बीतता गया और व्यवस्थाओं में अमूल–चूल परिवर्तन होते गये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की स्थिति में भी बहुत परिवर्तन हो गया और इलेक्ट्रो होम्योपैथी से कार्य करने की स्थिति बदल गयी है जब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अधिकारिता जागरूकता अभियान का प्रथम चरण प्रारम्भ किया गया था उस समय केन्द द्वारा पारित क्लीनिकल स्टैबलिश्टमेन्ट एक्ट 2010 उत्तर प्रदेश में लागू होने के लिए प्रतीक्षा में था तत्समय किसी भी चिकित्सा पद्धति के चिकित्सा व्यवसायी के लिए यह आवश्यक था कि वह चिकित्सा व्यवसाय करने के पहले अपने चिकित्सकीय अर्हताओं सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी जनपद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पास प्रेषित करें या दूसरे शब्दों में चिकित्सक को प्रैक्टिस करने के लिए अपने पंजीयन का आवेदन अपने जनपद के मुख्यचिकित्सा अधिकारी कार्यालय में करना आवश्यक था यद्यपि उस समय भी हमारे बहुत सारे साथियों ने पंजीयन के आवेदन मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय को प्रेषित नहीं किये थे।

जैसे ही हमें इस बात की जानकारी हुई बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की प्रबन्ध कमेटी की एक बैठक बुलायी गयी और उस बैठक में पंजीयन के विषय में गम्भीरता से विचार किया गया, यह एक ऐसा विषय था जिसपर निर्णय लेना बहुत आवश्यक था क्योंकि तत्कालीन प्रचलित व्यवस्थाओं के अनुरूप किसी भी चिकित्सक यदि वैधानिक रूप से चिकित्सा व्यवसाय करता है तो उस चिकित्सक को अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के यहाँ प्रेषित करना ही पड़ेगा। उस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति काफी बदल चुकी थी लेकिन हमारे अधिकांश इलेक्ट्रो होम्योपैथ अभी भी वर्ष 2004 की मनोदशा से उबर नहीं पा रहे थे। निराशा इस कदर घर कर चुकी थी कि उनके अन्दर उत्साह लगभग समाप्त सा हो गया था। यद्यपि तब तक 5–5–2010 , 21 जून, 2011 तथा 4 जनवरी, 2012 जैसे आदेश केन्द सरकार और राज्य सरकार द्वारा पारित किये जा चुके थे लेकिन व्यापक प्रचार के अभाव में हमारे चिकित्सकों के बीच इन आदेशों का उतना प्रभाव नहीं पड़ सका जितना कि पड़ना चाहिये था।

यद्यपि बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इन आदेशों के प्रचार और प्रसार में कोई कसर नहीं छोड़ी प्रचार के जितने भी माध्यम थे हर माध्यमों का सहारा लेते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के मध्य इस बात का व्यापक प्रचार किया गया कि प्रदेश सरकार द्वारा 4 जनवरी, 2012 को बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के पक्ष में शासनादेश जारी कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा, शिक्षा व अनुंसधान की अनुमति प्रदान की गयी थी और यह तब तक चलता रहेगा जब तक इस चिकित्सा पद्धति को सरकार द्वारा मान्यता नहीं प्रदान की जाती अर्थात प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी एक अधिकार प्राप्त चिकित्सा पद्धति के रूप में कार्य करने हेतु अधिकृत है।

इस तरह से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को उन्हीं नियमों और कानूनों का पालन करना होगा जो मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों के लिए आवश्यक है, इन व्यवस्थाओं के तहत हर चिकित्सक को चिकित्सा व्यवसाय हेतु जनपद के मुख्यचिकित्सा अधिकारी के यहां पंजीयन का आवेदन करना होगा हमारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक वैधानिकता के साथ चिकित्सा व्यवसाय करे इसलिए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने हर चिकित्सक तक यह बात पहुँचाने का प्रयास किया कि आप एक अधिकार प्राप्त चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक हैं।

आपको वही आचरण करने होंगे जो अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों द्वारा किये जाते हैं लेकिन समय का चक्र चलता है व्यवस्थाओं के परिवर्तन का परिणाम था कि कल तक प्रदेश में दर्जनों की संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथी संस्थाओं का संचालन हो रहा था, आज स्थिति यह है कि प्रदेश में मात्र एक ही संस्था बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ही शेष है जिसे अधिकार पूर्वक कार्य करने का अधिकार प्राप्त है, इसलिए जिन संस्थाओं के पास कार्य करने के अधिकार नहीं हैं उन्होंने पंजीयन सम्बन्धी गम्भीर विषय का मज़ाक उड़ाया।

हमने जहां चिकित्सकों को उनके अधिकार समझाने के प्रयास किये तथा पंजीयन की महत्ता और आवश्यकता के बारे में जागरूक किया वहीं हमारे साथियों ने चिकित्सकों को यह कहकर भ्रमित किया कि मुख्यचिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन का आवेदन सिर्फ मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को ही करना है, अभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता नहीं मिली है इसलिए किसी भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ को पंजीयन कराने की आवश्यकता नहीं है।

इन दो तरह की बातों से हमारे चिकित्सकों के मध्य अनिर्णय की स्थिति पैदा हो गयी कुछ लोग वैधानिकता की बात मानने लगे कुछ लोग उहापोह में ही पड़े रहे इस स्थिति से निपटने के लिए बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने चिकित्सक अधिकारिता जागरूकता अभियान कार्यक्रम बनाया और प्रदेश व्यापी कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया

शेष अंतिम पेज पर

अपनी दिवाली कब होगी ?

दिवाली तो हर साल ही आती है, कुछ लोग दिवाली में माला–माल हो जाते हैं ! तो कुछ कंगाल !! परन्तु परिस्थितियां कुछ भी हों यह एक ऐसा त्योहार है जिसे हर व्यक्ति मनाता है शायद भारतवर्ष में यही एक ऐसा त्योहार है जिसे हर जाति, हर वर्ग, हर धर्म के मानने वालों द्वारा स्वीकार किया जाता है, सही मायने में दीपावली उत्साह का पर्व है, प्रकाश का पर्व है, इस त्योहार को मनाने के पीछे यह भावना है कि हर व्यक्ति के जीवन में नया उत्साह हो, नई रौशनी हो और जीवन जीने की ललक हो। जीते तो हम सब हैं लेकिन जीना उसी का नाम है जो हँसी खुशी से जिये, स्वयं खुश रहे और अपने कार्यों द्वारा दूसरों को भी खुश रखने का प्रयास करे। कहने सुनने में तो यह बात बहुत अच्छी लगती है परन्तु धरातल पर अच्छी तभी लगती है जब व्यक्ति जिस कार्य में लगा है वह कार्य व्यवस्थित ढंग से चल रहा हो, कार्य करने में किसी प्रकार की कोई भी बाधा न हो एवं अर्थागम भी हो रहा हो। आज के व्यवहारिक जीवन में यही कटु सच्चाई है, दिवाली तो प्रतीक मात्र है इस प्रतीक के माध्यम से हम प्रेरणा लेने का प्रयास करते हैं कि ऐसी व्यवस्थाओं को जन्म दिया जाये जिससे कि हमारे जीवन का हर पल प्रकाशमय हो तथा दिवाली जैसी चकाचौंध वाली रोशनी हमें आल्हादित करती रहे, यह दिवाली तो गुज़र गई, हम सभी इलेक्ट्रो होम्योपैथ भाईयों ने यह त्योहार खुशी–खुशी मना भी लिया होगा, लेकिन जिस दिवाली का इन्तेजार हम वर्षों से करते आ रहे हैं शायद अभी उस इन्तेज़ार के समाप्ति की स अभी नहीं आई है, प्रतीक्षा तो बढ़ती ही जा रही है, धीरे–धीरे आँखें पथराती जा रही हैं, हृदय के स्पंदन में भी अनियमितता के स्पष्ट दर्शन होने लगे हैं परन्तु मन है कि मानता ही नहीं, वह अभी भी इस प्रतीक्षा में है कि अवश्य एक दिन आयेगा जब प्रतीक्षा समाप्त होगी और इलेक्ट्रो होम्योपैथों की वास्तविक दिवाली होगी। प्रस्तावना के बाद हमें यह भी समझना ज़रुरी है कि आखिर वे कौन से ऐसे कारण हैं जो सम्भावनाओं को फलीभूत नहीं होने देते हैं।

जब हम इन कारणों पर एक दृष्टि डालते हैं तो जो कारण सामने आते हैं उनमें कहीं न कहीं अपनी ही कमी नज़र आती है, यदि हम पिछले 20 वर्षों के क्रियाकलाप पर एक दृष्टि डालें तो एकदम स्पष्ट हो जायेगा कि हमने किया क्या है और पाया क्या है ?सही मायने में आज तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी घटित हुआ है उसके पीछे कभी भी रचनात्मक सोच नहीं रही। 1998 से हमने जो पाने का सिलसिला शुरु किया है वह अभी तक जारी है और आगे भी जारी रहेगा, सन् 1998 में दिल्ली हाईकोर्ट ने जो ऐतिहासिक आदेश दिया वह अकारण ही नहीं आया, जिन महानुभाव ने यह जनहित याचिका लगाई थी उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उत्थान की बात नहीं की थी और न ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये कोई मांग की थी यह तो तत्कालीन समय और परिस्थितियों का ही प्रभाव था जिसके कारण विद्वान न्याय धीश द्वैय ने विवेक का पूरा प्रयोग करते हुये नीर–क्षीर की तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी की वास्तविकता को समझा और इलेक्ट्रो होम्योपैथी में चल रहे धींगा मुश्ती और फैली हुई अराजकता को रोकने के लिये कुछ गाईड लाईन्स दीं जो वस्तुतः लागू हो गई होतीं तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति आज कुछ और ही होती, लेकिन हुआ क्या ?वही ढाक के तीन पात ! इस आदेश पर हमने खुशियां मनाई जश्न भी मनाये और आदेश पारित होने पर कोई भी व्यक्ति श्रेय लेने से पीछे नहीं हटा, श्रेय लेना चाहिये, प्रयासों का सम्मान भी होना चाहिये, साथ–साथ कार्य पर भी ध्यान देना चाहिये।

इसे हम तो विधि की विडम्बना ही कहेंगे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ होता है सिवाय कार्य संस्कृति को जन्म देने के, जब कार्य की बात आती है तो हर अच्छी चीज़ पर नई–नई विसंगतियां निकाल दी जाती हैं जिसका परिणाम यह होता है कि बनती बात भी बिगड़ जाती है। 1998 का आदेश यदि उस समय संचालित होने वाली इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्थाओं के संचालकों द्वारा ज़रा सा भी इस आदेश के प्रति सकारात्मक रुख अपनाया गया होता और एक जुट हो कर किसी एक राज्य में इस आदेश का अनुपालन करा लिया होता तो शायद 25 नवम्बर, 2003 का जन्म ही नहीं हुआ होता, आपसी खींच–तान, एक दूसरे से बड़ा दिखने की इच्छा, स्वयं ही श्रेष्ठ हैं यह सब–कुछ ठीक है, सब– कुछ करते,पर कम–से–कम किसी एक राज्य में तो इसे लागू करवा देते। तब डिग्री– डिपलोमा की लड़ाई में ही उलझे रहे डॉक्टर शब्द के प्रयोग पर आपस में ही चर्चायें करते रहे और जो वास्तविक बिन्दु थे उनको गौण कर दिया। कभी– कभी तो ऐसा भी लगता है कि यह सारे संस्था संचालक बहुत चतुराई से इस आदेश को अनुपालित ही नहीं कराना चाहते थे इनको शायद यह भय था कि अगर दिल्ली हाईकोर्ट के इस आदेश का अनुपालन हो गया तो सरकारी शिकंजा और कस जायेगा, कभी–कभी मन एक अज्ञात भय से घबड़ाने लगता होगा कि उनके अस्तित्व का क्या होगा ?इसीलिये कानूनी आवरण को लागू करवाने से बेहतर समझा कि विषय को ही मोड़ दो ! इसलिये इसे मान्यता की मांग के रूप में विषय को बदल दिया गया। सरकार को बैठे बिठाये अवसर मिल गया और उसने एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन कर दिया जिसे मान्यता के बारे में निर्णय लेना था, कमेटी में चिकित्सा के विभिन्न क्षेत्र के मूर्धन्य विद्वान सम्मिलित किये गये कमेटी ने अपना काम किया, चूँकि कमेटी में सब उच्च स्तरीय मानसिकता के व्यक्ति थे उन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी का मूल्यांकन अन्य प्रचलित मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों से तुलनात्मक रुप से किया जब कि सत्यता तो यह है कि अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के मापदण्डों के अनुरुप इलेक्ट्रो होम्योपैथी कहीं नहीं टिकती। परिणाम क्या हुआ ? 25 नवम्बर, 2003 का आदेश ! इस आदेश में कुछ भी खतरनाक नहीं था पर नियति को कुछ और ही स्वीकार था फलस्वरुप अच्छे खासे आदेश का ऐसा अनुवाद किया गया कि अर्थ का अनर्थ हो गया घटनाक्रम इतनी तेज़ी से घूमा कि पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में एक भूचाल आ गया और अघोषित बन्दी हो गई। इसे कहते हैं विधि का विधान ऊपर वाले को कुछ और ही स्वीकार है वह इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को कुछ अच्छा ही देना चाहता है तभी उसने हम सब के संयम की परीक्षा ली, कहते हैं कि परिस्थितियां कभी एक सी नहीं रहती हैं यहाँ पर भी यही नियम लागू हुआ और परिस्थितियों ने करवट ली , 7 साल के लम्बे इंतजार के बाद आखिरकार भारत सरकार ने यह स्पष्टीकरण दिया कि 25 नवम्बर, 2003 के पत्र में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्रतिबन्धित करने सम्बन्धी कोई प्रस्ताव नहीं था।

यह आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए संजीवनी के सम्मान है, जिसने कि मृतप्राय इलेक्ट्रो होम्योपैथी को नया जीवनदान दिया इस आदेश के आते ही सम्पूर्ण इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में एक नई स्फूर्ति ने जन्म लिया, लोगों ने कहा कि चलो सरकार को सद्बुद्धि तो आयी लेकिन यहाँ पर फिर वही कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी का इतिहास है। लगभग हर संस्था संचालक यह दावा करने लगा कि 5–5–2010 का आदेश उन्हीं के प्रयासों से हुआ है एक दूसरे पर शब्दबांण चलने लगे लेकिन कुछ समझदार किस्म के लोग जिनकी संख्या इलेक्ट्रो होम्योपैथी में काफी कम नज़र आती है उन्होंने यह सन्देश दिया कि हर परिणाम किसी न किसी प्रयासों से सम्भव होते हैं जिस किसी के भी प्रयास से यह आदेश आया वह धन्यवाद का पात्र है चूँकि यह आदेश मात्र किसी संस्था विशेष के लिए नहीं बल्कि समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत के लिए है। जब 25 नवम्बर, 2003 का आदेश पूरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर प्रभावी हुआ तो 5–5–2010 का आदेश इसी 25 नवम्बर, 2003 का स्पष्टीकरण है इसलिए यह आदेश भी समूचे इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत पर प्रभावी है, यह मेरा है, यह तेरा है, इस तरह के कार्यों से न तो निजी विकास होता है, न ही संगठन का विकास होता है और न ही चिकित्सा पद्धति का विकास होता है। हम सब लोग जो भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ जुड़े हैं उन सब की यह इच्छा है कि चिकित्सा पद्धति के साथ कुछ ऐसा हो जिससे सभी लोग लाभन्वित हों।

चूंकि जब हित सधते हैं तभी लोगों का प्यार बढ़ता है यह युग अर्थ युग है और कटुसत्य तो यह है कि हर व्यक्ति आर्थिक हो रहा है, व्यक्ति उसी के साथ जुड़ना चाहता है जहाँ से उसकी आर्थिक वृद्धि की सम्भावना दिखती है इसलिए 5–5–2010 के आदेश का लोगों ने बाँह पसार कर स्वागत किया लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हर काम आसानी से नहीं होता है। यहां पर भी यही हुआ जब यह 5–5–2010 का आदेश शासकीय विश्लेषण के लिए पहुँचा तो वहाँ पर बैठे हुए अधिकारियों ने यह तो स्वीकारा कि यह आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथी को प्रतिबन्धित तो नहीं करता है लेकिन कार्य करने के लिए मार्ग भी प्रशस्त नहीं करता। अधिकारियों का विश्लेषण किसी हद तक सत्य भी है चूंकि इस आदेश को क्रियान्वित करने के लिए किसी को निर्देश नहीं दिया गया है और न ही इस आदेश की प्रतिलिपि किसी अधिकारी को प्रेषित की गयी थी परिस्थितियां ऊपर से साम्य दिख रही थी। लेकिन कार्य करने के लिए जो एक स्पष्ट रास्ता होना चाहिये उसको बनाने की अभी जरूरत थी किसी न किसी को तो पहल करनी ही थी इसलिए इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया ने इस विषय पर पहल की भारत सरकार को पत्र लिखे और स्पष्ट आदेश की मांग की।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया की यह पहल रंग लायी और जो अपेक्षित था वह प्राप्त हुआ। ——

क्रमशः

अधिकार की चाहत में ... प्रथम पेज से आगे

विचार में पड़े रहकर कार्य न करें यह भी उचित नहीं है हमें जो अधिकार और जो अवसर प्राप्त है हमें उनका भरपूर उपयोग करना चाहिये और कार्य करते हुए लक्ष्य की प्राप्ति करनी होगी। प्रतीक्षा का समय अब ज्यादा नहीं है जो वर्तमान दृश्य दिखायी दे रहा है यह अच्छाई की ओर संकेत दे रहा है इसलिए अनिर्णय की स्थति से उबरकर सकारात्मक निर्णय लें और पूरे उत्साह और जोश के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में लग जाये इलेक्ट्रो होम्योपैथी सबकी है इसपर किसी का विशेषाधिकार नहीं है यह अलग बात है कि आज कुछ संस्थाओं को यह अधिकार प्राप्त है लेकिन कार्य करने का अधिकार और कार्य करने के लिए सभी के लिए रास्ते खुले है अधिकार जताने की होड़ में जोश में आकर हमें कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे कि चिकित्सा पद्धति उससे जुड़े चिकित्सक और चिकित्सा पद्धति का लाभ ले रहे व्यक्तियों का नुकसान न हो इलेक्ट्रो होम्योपैथी असीमित है इसको सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता । अनुसंधान वह क्षेत्र है जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी को और अधिक जनोपयोगी बनाया जा सकता है इसलिए आईये हमसब मिलकर सकारात्मक विचारों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य करें।

प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिये रिफ्रेशर कोर्स आवश्यक

आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है जो व्यक्ति या पद्धति प्रतिस्पर्धा में शामिल नहीं होती वह पिछड़ जाती है, विज्ञान निरन्तर बदलता रहता है क्योंकि उसमें नित्य नये शोध होते रहते हैं और उन्हीं शोधों का ही परिणाम है कि हम विकास की दौड़ में सम्मिलित रहते हैं। यह तकनीक का युग है, रोज एक नई तकनीक आती है और जनता उसे हाथों–हाथ लेती है आज जितनी भी प्रचलित पद्धतियां हैं उनमें से सिर्फ एलोपैथिक ही एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो लगातार शोध में लगी रहती है, अन्य चिकित्सा पद्धतियों में जो शोध किये जाते हैं उनकी गति बहुत धीमी होती है या फिर शोधों के परिणाम बहुत विलम्ब से आते हैं इसी कारण से यह चिकित्सा पद्धतियां एलोपैथी की तुलना में कम विकसित हो पाई हैं।

सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद जो कभी चिकित्सा पद्धतियों की सिरमौर हुआ करती थी, पिछले कुछ दिनों तक अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिये संघर्ष करती दिखाई पड़ती थी, यह तो कुछ मापदण्डों में परिवर्तन के कारण आयुर्वेद व उसकी समकालीन चिकित्सा पद्धतियों में शोध के कार्य प्रारम्भ हुये परिणाम सुःखद सामने आये।

हर चिकित्सा पद्धति का अपना एक अलग स्थान है, अपनी अलग उपयोगिता है और इसी उपयोगिता को अक्षुण बनाये रखने के लिये शोध कार्य बड़े सहायक सिद्ध होते हैं, शोधों की उपयोगिता इसलिये भी बढ़ जाती है क्योंकि शोध नवीनता पाने के लिये होते हैं नवीनता हर एक को पसन्द है।

चिकित्सा पद्धति का आविष्कार देश, समय और वातावरण के अनुरुप होता है, समय बदलने के साथ–साथ जैवकीय और परिस्थितकीय (म्बवसवहपबंस) जो प्राणी के स्वभाव और स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं कुछ प्रभाव अनुकूल तथा कुछ प्रभाव प्रतिकूल भी होते हैं इन्हीं प्रतिकूल प्रभावों से बचने के लिये शोधों का सहारा लेना पड़ता है। हम तो इलेक्ट्रो होम्योपैथ हैं और हमारी चिकित्सा पद्धति पूर्णतयः वनस्पतियों एवं पादप जगत पर निर्भर करती है इसलिये पर्यावरण का सबसे ज़्यादा प्रभाव इसी चिकित्सा पद्धति को झेलना पड़ता है। आज से 150 वर्ष पूर्व महात्मा गैटी ने जब इस चिकित्सा पद्धति का आविष्कार किया था तब इतना प्रदूषण नहीं था, वनस्पतियां पूरे तौर पर प्रकृतिक गुणों से भरपूर हुआ करती थीं लेकिन अब वनस्पतियां तो वही हैं, गुणों में भी कोई कमी नहीं आई है परन्तु पर्यावरण की मार तो उनपर पड़ी ही है, ऐसी स्थितियों में यहीं पर भी शोध की बहुत आवश्यकता है यदि प्रतिस्पर्धा में रहना है तो हमारे चिकित्सकों को नित्य नये शोधों से परिचित रहना होगा, मात्र औषधियां ही नहीं, नित्य नई उत्पन्न होने वाली बीमारियों से भी परिचित रहना होगा।

The Burning Question Posterior Position

When you are preparing for delivery, a baby is typically in the face down position. However, sometimes the baby is in the posterior position, or face up. Some people call this "sunny side up," while the medical profession calls it the occiput posterior position. This means that the hardest part of the baby's head rests near your lower back. The result? A longer labor, since the head has to rotate further during labor. It can also mean intense back pain for mom!

Most babies turn around on their own during labor and come out face down. But for those that don't, the doctor may need to rotate the baby manually or decide to do a cesarean section.

What Does Posterior Position Mean?

When your baby is in a posterior position, it means that he is facing the wrong way for labor and delivery. About one in ten babies start labor this way, with the back of his head against your spine. This can lead to a much more difficult labor, as you will probably have intense back pain and labor will take longer. In addition, your water may break early in labor, and you may feel like you have to push before you cervix is fully dilated. All of these things can combine to make a miserable birth experience for you.

The good news is that your baby can often turn himself when he gets down to the birth canal. He will have to turn 180 degrees to get into the best position, so that can take a while. If he doesn't turn, he will be born face up, and he might need the help of a vacuum or forceps to get out of your body.

Why Are Some Babies in Posterior Position?

There could be numerous reasons the baby is in a posterior position. If the pelvis is oval or heart-shaped, your baby might settle into the wrong position. The same is true if you have a narrow or wide pelvis. Lifestyle could be another factor; if you are very sedentary, the baby is more likely to be posterior. Doctors note that those who live in developing countries rarely deliver children who are in the posterior position, thanks to all the movement they often do, such as manual fieldwork or squatting to cook and eat.

Another issue with lifestyle might be your job. If you sit at a computer for hours or otherwise sit in a desk chair, your pelvis is naturally tipped backward. This means that the baby will rest the heaviest part of his head on your spine in order to feel comfortable. It works for baby, but it can make carrying and delivering him more difficult!

How Does Posterior Position Affect Labour?

When you go into labor with a baby in the posterior position, it often means that you will have to deal with consequences that other mothers might avoid. For instance, you might need Pitocin to stimulate contractions, and you might push longer to get the baby out. You also have a higher risk of an assisted vaginal delivery, a c-section or a postpartum hemorrhage.

If you do give birth vaginally, you are probably to have severe perineal tears or an episiotomy. Your baby might also have some short term complications, such as lower five-minute, apgar scores, more time in the hospital and a possible stay in the neonatal intensive care unit.

How Can You Tell If the Baby Is in a Posterior Position?

Though it might be tough to tell, there are some ways that a baby makes it clear he is in the posterior position. Where are you feeling the baby kick? If the kicks are in front and your tummy is shaped like a saucer around your naval, then he is likely posterior. You could be having a great deal of back pain, and you can clearly feel your baby's limbs through your belly. But if those kicks are coming at your back and sides and your tummy is smooth, the baby is likely in the right position for delivery.

How Can You Help Your Baby Turn in an Anterior Position?

If your doctor agrees that your baby is in the posterior position, there are a few things you can do to help move him to the proper position. Before the Delivery; Long before you deliver, you can change your own posture in order to help your baby turn around. This is called optimal fetal positioning. To do this, always try to tilt your pelvis forward, keeping your knees lower than your hips if you are sitting down. One trick includes turning around your favorite armchair and sitting on it backwards, by kneeling on the seat pad and leaning forward over the chair. This can tilt your pelvis to the right position. Another trick is to get on all fours as though you are going to scrub the floor. Put a cushion in your car to lift up your bottom while you drive. Lean over a birthing ball while you watch television.

Finally, remember to move around a great deal when you are working, so your baby doesn't get too comfortable in your tilted pelvis.

जागरुकता का दूसरा चरण .... पेज 2 से आगे

जिसका परिणाम यह हुआ कि चिकित्सकों के मध्य उत्साह का संचार हुआ। खोया हुआ विश्वास वापस आया लोगों के मन में यह भाव भी पैदा हुआ कि हम भी अधिकार प्राप्त हैं और हमें भी वही आचरण करने चाहिये जो अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त हैं।

लेकिन ऐसा सोचने वालों की संख्या बहुत कम है लेकिन जो है वह भी कम नहीं है इसी अभियान को आगे बढ़ाने के लिए तथा बदली हुई परिस्थितियों में किस तरह से एक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अधिकारपूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करे इसपर पुर्नविचार किया गया और अभियान का दूसरा चरण 5 नवम्बर 2016 से प्रारम्भ होने जा रहा है।